डायरिया- भारत में निर्मित प्रथम रोटावायरस टीके की कीमत 54 रूपए होगी

भारतीय वैज्ञानिकों ने एक महत्वपूर्ण खोज में डायरिया के लिए जिम्मेदार रोटावायरस का खात्मा करने वाले कम कीमत के टीके को विकसित करने में सफलता हासिल की है। रोटावायरस खतरनाक डायरिया का प्रमुख कारण है जिससे देश में प्रति वर्ष पांच वर्ष की आयु से कम के 1.6 लाख से भी अधिक बच्चों की मृत्यु हो जाती है। भारत बायोटेक द्वारा तैयार इस टीके को 2014 में बाजार में उतारने की संभावना है। इसकी कीमत 54 रुपए प्रति खुराक रहने की उम्मीद है जो कि रोटावायरस के लिए उपलब्ध अन्य टीकों से काफी कम है।

इस परियोजना से जुडे वैज्ञानिकों का कहना है कि इस टीके ने सभी क्लिनिकल परीक्षण पूरे कर लिए हैं और भारतीय दवा महानियंत्रक (डीसीजीआई) द्वारा मंजूरी मिलने के उपरांत अगले वर्ष तक बाजार में बिक्री के लिए इसके उपलब्ध होने की संभावना है।

1985 में एम्स में शोध कार्य के दौरान रोटावायरस तत्व को अलग करने वाले जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के भूतपूर्व सचिव डॉ. एम. के. भान ने बताया कि कि इस नए टीके, रोटावेक की कीमत लगभग 54 रुपए प्रति खुराक रहने की संभावना है जो कि फिलहाल बाजार में उपलब्ध आयातित टीकों की कीमत का 1/40 भाग है। श्री भान ने यह भी कहा कि- "रोटावेक टीका पोलियो की दवा से मिलता जुलता है। इसे 6, 10 और 14 सप्ताह के उसी नियम के अनुसार दिया जाएगा। भयंकर डायरिया की स्थिति में इसके परीक्षण ने 56 प्रतिशत तक की प्रभावात्मकता दर्शायी है और अत्यधिक भयंकर डायरिया के मामलों में यह 61 प्रतिशत रही है। इसका कोई अन्य दुष्प्रभाव नहीं है और यह पूरी तरह से सुरक्षित है।" जैवप्रौद्योगिकी विभाग में सचिव के. विजय राघवन ने कहा कि इसके परिणाम निर्दिष्ट करते हैं कि यदि इस टीके को लाइसेंस किया जाए तो भारत में हर वर्ष हजारों बच्चों की जिंदगी बच सकती है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. देवेन्द्र के तनेजा का कहना था कि -"क्योंकि इससे बचाव में स्वच्छता, सुरक्षित जलापूर्ति और सफाई जैसे कारकों का काफी कम प्रभाव होता है और स्तनपान से शैशव अवस्था की केवल छोटी सी अवधि तक ही संरक्षण प्रदान किया जा सकता है तथा डायरिया के दौरान मरीज को बार-बार उल्टी आने की वजह से घोल देने की पद्धति भी अधिक कारगर नहीं है ऐसे में एक प्रभावी टीका इससे बचाव के लिए काफी उपयुक्त विकल्प है।"